कृषि विज्ञान केन्द्र

गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चूरू (राज.)

ई–न्यूज लेटर

मई 2026, अंक: 25

नमी संरक्षण हेतु मल्चिंग तकनीक पर प्रशिक्षण आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र सरदारशहर द्वारा दिनांक 7 अप्रैल 2026 को ग्राम दाउदसर में "नमी संरक्षण के लिए मल्चिंग का प्रयोग" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 23 कृषक (महिलाएं एवं पुरुष) ने ग्रामीण स्तर पर सक्रिय भागीदारी निभाई। कृषि अभियांत्रिकी विषय विशेषज्ञ डॉ प्रवीण ने प्रशिक्षणार्थियों को बदलते जलवायु परिदृश्य में मृदा नमी संरक्षण के महत्व एवं उसकी वैज्ञानिक तकनीकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।प्रशिक्षण के दौरान मल्चिंग तकनीक के विभिन्न प्रकार जैसे ऑर्गेनिक मल्च (फसल अवशेष, भूसा, पत्तियां) एवं प्लास्टिक मल्च के उपयोग की विधि, समय एवं लाभों पर विशेष प्रकाश डाला गया।

डॉ प्रवीण ने बताया कि मल्चिंग से मृदा में नमी का संरक्षण होता है, खरपतवार नियंत्रण में सहायता मिलती है, मिट्टी का तापमान संतुलित रहता है तथा फसल उत्पादन में वृद्धि होती है। इसके साथ ही प्रशिक्षणार्थियों को खेत स्तर पर मल्च बिछाने की सही विधि, मोटाई, फसल के अनुसार चयन एवं लागत-लाभ के वैज्ञानिक पहलुओं को भी समझाया गया।इसके अतिरिक्त नमी संरक्षण के अन्य प्रभावी उपायों जैसे गहरी जुताई, मेड़बंदी, वर्षा जल संचयन एवं सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों (ड्रिप एवं स्प्रिंकलर) के उपयोग पर भी चर्चा की गई। प्रशिक्षण में यह भी बताया गया कि मृदा संरचना एवं जैविक पदार्थ की मात्रा बढ़ाकर जल धारण क्षमता को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है। प्रशिक्षण के अंत में प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा किए तथा मल्चिंग जैसी तकनीकों को अपनाकर जल संरक्षण एवं फसल उत्पादकता बढ़ाने की दिशा में कार्य करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

भूमि सुपोषण जागरूकता अभियान का आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र सरदारशहर द्वारा भारत सरकार एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ,नई दिल्ली के निर्देशानुसार दिनांक 20 मार्च 2026 से 17 अप्रैल 2026 तक "भूमि सुपोषण अभियान" को एक व्यापक जन-जागरूकता अभियान के रूप में संचालित किया गया। यह अभियान किसानों को मृदा स्वास्थ्य एवं प्राकृतिक संसाधनों के वैज्ञानिक प्रबंधन के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से चलाया गया, जिसमें सरदारशहर क्षेत्र के कुल 493 किसानों (महिला एवं पुरुष) ने प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी निभाई।

अभियान के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनमें जागरूकता कार्यक्रम, केंद्र परिसर में प्रशिक्षण, खेत स्तर पर प्रदर्शन (फील्ड डेमोंस्ट्रेशन) तथा कृषि विज्ञान केंद्र की इकाइयों पर किसानों के भ्रमण कार्यक्रम शामिल रहे। इन गतिविधियों के माध्यम से किसानों को प्राकृतिक खेती के उत्पादों के महत्व, उनकी गुणवत्ता तथा मानव स्वास्थ्य पर उनके सकारात्मक प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया गया। साथ ही मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन के अंतर्गत भूमि की उर्वरता बनाए रखने, संतुलित उर्वरक उपयोग, जैविक खादों के प्रयोग एवं दीर्घकालीन भूमि संरक्षण के वैज्ञानिक उपायों की जानकारी दी गई।किसानों के साथ समूह चर्चा के माध्यम से भूमि सुपोषण से जुड़े विभिन्न विषयों पर संवाद स्थापित किया गया,

जिसमें मृदा एवं जल परीक्षण की सही विधियां, नमूना लेने की प्रक्रिया, परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का संतुलित प्रयोग तथा समस्याग्रस्त मृदाओं के सुधार के उपायों पर विशेष जोर दिया गया। किसानों को यह भी समझाया गया कि वे पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का समन्वय करके अपनी भूमि की उत्पादकता और गुणवत्ता को बेहतर बना सकते हैं।

अभियान के दौरान सोशल मीडिया माध्यमों तथा केंद्र के आधिकारिक व्हाट्सएप समूह के जरिए भी किसानों को लगातार जागरूक किया गया, जिससे अधिक से अधिक लोगों तक जानकारी पहुंचाई जा सके। इस अभियान के परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में किसान मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन के प्रति जागरूक हुए तथा उन्होंने वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने में रुचि दिखाई।

संतुलित उर्वरक उपयोग एवं जैविक विकल्पों के प्रोत्साहन हेतु जागरूकता अभियान संचालित

कृषि विज्ञान केंद्र सरदारशहर द्वारा 13 अप्रैल 2026 से "संतुलित उर्वरक उपयोग एवं जैविक विकल्पों के प्रोत्साहन" विषय पर जागरूकता अभियान निरंतर संचालित किया जा रहा है। यह अभियान विशेष रूप से खरीफ फसलों की बुवाई से पूर्व किसानों को रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग को कम करने तथा उनके स्थान पर जैविक एवं टिकाऊ विकल्पों को अपनाने के उद्देश्य से चलाया जा रहा है।अभियान के अंतर्गत किसानों को डीएपी एवं यूरिया जैसे रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में वैज्ञानिक जानकारी दी जा रही है तथा उनके संतुलित एवं आवश्यकता आधारित उपयोग पर जोर दिया जा रहा है। इसके साथ ही वर्मी कम्पोस्ट, साधारण कम्पोस्ट एवं अन्य जैविक खादों के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु किसानों को जागरूक किया जा रहा है, जिससे मृदा की उर्वरता, संरचना एवं सूक्ष्मजीव गतिविधियों में सुधार हो सके और दीर्घकालीन उत्पादकता बनी रहे।

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा इस अभियान के तहत विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम, किसान संवाद, समूह चर्चा एवं प्रशिक्षण गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है, जिनमें किसानों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पोषक तत्व प्रबंधन, मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक सिफारिशें तथा एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (Integrated Nutrient Management) की तकनीकों के बारे में बताया जा रहा है। किसानों को यह भी समझाया जा रहा है कि जैविक एवं रासायनिक स्रोतों के समन्वित उपयोग से लागत में कमी लाकर उत्पादन को कैसे स्थिर एवं लाभकारी बनाया जा सकता है।अभियान के दौरान केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा व्हाट्सएप समूहों एवं अन्य जनसंपर्क माध्यमों के जरिए किसानों को नियमित रूप से तकनीकी संदेश, सलाह एवं वीडियो के माध्यम से जानकारी प्रदान की जा रही है, जिससे अधिक से अधिक कृषक इस पहल से जुड़ सकें। साथ ही खरीफ सीजन की फसल योजना (क्रॉप प्लानिंग) से पहले किसानों को उचित पोषक तत्व प्रबंधन, उर्वरकों के संतुलित उपयोग एवं जैविक विकल्पों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।इस जागरूकता अभियान के माध्यम से बड़ी संख्या में किसान उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग एवं जैविक खादों के महत्व को समझ रहे हैं तथा खेती में टिकाऊ एवं पर्यावरण अनुकूल तकनीकों को अपनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

मिट्टी एवं जल परीक्षण की विधियाँ तथा समस्याग्रस्त मृदाओं के सुधार पर प्रशिक्षण संपन्न”

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिनांक 20 से 23 अप्रैल 2026 तक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें गांव पुलासर एवं बरलाससर की 22 कृषक महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रशिक्षण का मुख्य विषय “मिट्टी एवं पानी की जांच की विधियाँ तथा समस्याग्रस्त मृदाओं के सुधार हेतु विभिन्न उपाय”रहा। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. वी. के. सैनी के निर्देशन में किया गया, जिनके द्वारा प्रतिभागियों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के दौरान मृदा के महत्व, मृदा स्वास्थ्य एवं उसकी उत्पादकता पर प्रभाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई तथा वैज्ञानिक तरीके से मृदा नमूना लेने की विधि जैसे उचित स्थान का चयन, 15-20 सेमी गहराई से नमूना संग्रहण एवं उसकी सही लेबलिंग के बारे में प्रशिक्षित किया गया । समस्याग्रस्त मृदाओं जैसे लवणीय, क्षारीय एवं अम्लीय मिट्टियों की पहचान, उनके कारण एवं उनके दुष्प्रभावों पर चर्चा करते हुए इनके सुधार के लिए जिप्सम, गंधक, जैविक खाद (वर्मी कम्पोस्ट), हरी खाद एवं फसल चक्र जैसे प्रभावी उपायों को विस्तार से समझाया गया। प्रतिभागियों को फील्ड स्तर पर मृदा परीक्षण किट के उपयोग, उर्वरकों की संतुलित मात्रा निर्धारण तथा मृदा स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर खेती करने की विधियों का प्रदर्शन किया गया और प्रशिक्षण के दौरान सीखी गई तकनीकों को अपनाने का संकल्प करवाया गया । प्रशिक्षण के समापन अवसर पर प्रतिभागियों से फीडबैक लिया गया तथा डॉ. सैनी द्वारा सभी महिलाओं को अपने खेतों में इन वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने एवं कृषि विज्ञान केंद्र से निरंतर संपर्क बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया।

मूंगफली एवं कपास फसल में सिंचाई प्रबंधन पर तकनीकी प्रशिक्षण सम्पन्न

गांव मालसर में दिनांक 23 अप्रैल 2026 को कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा “मूंगफली एवं कपास की फसल में पानी का विवेकपूर्ण उपयोग तथा सिंचाई की क्रमबद्ध योजना” विषय पर तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र के 28 प्रगतिशील किसानों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। इस अवसर पर कृषि अभियांत्रिकी विषय विशेषज्ञ डॉ. प्रवीण ने बताया कि खरीफ फसलों में इरीगेशन शेड्यूलिंग (Irrigation Scheduling) का आधार फसल की क्रिटिकल ग्रोथ स्टेज, मिट्टी की नमी (Soil Moisture Status) तथा मौसमीय कारकों पर निर्भर करता है। उन्होंने मूंगफली में फ्लावरिंग, पेगिंग एवं पॉड डेवलपमेंट अवस्थाओं को क्रिटिकल बताते हुए इन चरणों पर 50–60 मिमी पानी की आवश्यकता पर जोर दिया। कपास में स्क्वायरिंग, फ्लावरिंग एवं बॉल फॉर्मेशन अवस्था पर 60–80 मिमी सिंचाई आवश्यक बताई गई, जिससे बॉल ड्रॉपिंग की समस्या कम होती है। तकनीकी सत्र में ड्रिप एवं स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली को अपनाने पर विशेष जोर दिया गया, जिससे 30–50% तक जल की बचत एवं 20–25% तक उत्पादन वृद्धि संभव है। साथ ही उन्होंने मल्चिंग, फील्ड लेवलिंग, मेढ़बंदी एवं रेनवॉटर हार्वेस्टिंग जैसी जल संरक्षण तकनीकों को भी अपनाने की सलाह देते हुए सॉयल मॉइस्चर मीटर के उपयोग की जानकारी भी दी, जिससे वैज्ञानिक ढंग से सिंचाई का निर्धारण किया जा सके।

उर्वरकों के संतुलित उपयोग विषय पर प्रशिक्षण संपन्न

दिनांक 24 अप्रैल 2026 को कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा गांव पातलीसर में “उर्वरकों के संतुलित उपयोग” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के 27 प्रगतिशील किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. विनोद कुमार सैनी ने मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग न कर संतुलित एवं

आवश्यकतानुसार उपयोग करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरकों की मात्रा निर्धारित करने, मृदा स्वास्थ्य कार्ड के उपयोग तथा नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश (NPK) के संतुलित अनुपात को अपनाने पर विशेष जोर दिया, साथ ही जैविक स्रोतों जैसे वर्मी कम्पोस्ट, गोबर की खाद एवं हरी खाद को शामिल करने की सलाह दी जिससे मृदा की उर्वरता एवं संरचना में सुधार होता है।

सस्य विज्ञान विशेषज्ञ , हरीश कुमार रछोइया ने उर्वरकों के सही समय, सही मात्रा एवं सही विधि पर विशेष ध्यान दिलाया। उन्होंने बताया कि नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग विभाजित खुराक (split dose) में करना अधिक प्रभावी होता है, जबकि फॉस्फोरस एवं पोटाश को बुवाई के समय आधार खाद (basal dose) के रूप में देना चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने फर्टिगेशन तकनीक, नीम-कोटेड यूरिया के उपयोग, सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे जिंक एवं आयरन की कमी के लक्षण तथा उनके सुधार के उपायों पर भी विस्तार से जानकारी दी। प्रशिक्षण के दौरान उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से होने वाले दुष्प्रभाव जैसे मृदा स्वास्थ्य में गिरावट, जल प्रदूषण एवं उत्पादन लागत में वृद्धि के प्रति भी किसानों को जागरूक किया गया।

संकलनकर्ता	संपादक	प्रकाशक
श्री हरीश कुमार रछोइया, विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) श्री श्याम बिहारी, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशुपालन) डॉ अजय कुमावत, विषय वस्तु विशेषज्ञ (बागवानी) डॉ प्रवीन, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी)	डॉ रमन जोधा, विषय विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) Designed & Typed - श्री सुनील कुमार वी वी (स्टेनो)	डॉ वी के सैनी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर चुरु -1